Advanced International Journal for Research (AIJFR)
E-ISSN: 3048-7641 ● Website: www.aijfr.com ● Email: editor@aijfr.com

पौराणिक कथाओं से असंबद्ध शिव की सौम्य प्रतिमाएँ

डॉ० प्रदीप सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास विभाग
टी०डी०पी०जी० कॉलेज, जौनपुर

हिन्दू धर्म के प्रमुख देवताओं में शिव संहारक के रूप में स्वीकृत हैं। शैव अनुयायी उन्हें सृष्टिकर्ता भी मानते हैं। वे उन्हें सर्वोच्च देवता के रूप में स्वीकार करते हैं। शिव का व्यक्तित्व बहुपक्षीय है। एक ओर वे अपने भक्तों के लिए अत्यन्त कृपालु और अनुग्रहदाता हैं तो दूसरी ओर स्मृति के विनाश हेतु ताण्डव नृत्यकर्ता भी हैं। शिव को संगीत, नृत्य और योग का प्रवर्तक माना गया है।

शिव की प्रतिमाओं को दो रूपों में विभक्त किया गया है—

1. सौम्य रूप प्रतिमा
2. घोर, उग्र या संहार रूप प्रतिमा

पुनः इन्हें पौराणिक कथाओं से असंबद्ध और संबद्ध दो भागों में विभाजित किया गया है।[1]

पौराणिक कथाओं से असंबद्ध शिव की सौम्य प्रतिमाओं के अंतर्गत निम्न प्रतिमाएँ आती हैं, जिनका विवरण निम्न है—

1- चन्द्रशेखर प्रतिमा

इस प्रतिमा के अंतर्गत शिव के मस्तक पर चन्द्रमा की आकृति प्रदर्शित की जाती है। शिव की चन्द्रशेखर प्रतिमा को तीन रूपों में दिखाया जाता है—

(i) केवल चन्द्रशेखर प्रतिमा

चन्द्रशेखर प्रतिमा का उल्लेख सभी आगमों में मिलता है। *अंशुमद्भेदागम* के विवरण के अनुसार केवल चन्द्रशेखर प्रतिमा को चतुर्भुज बनाना चाहिए।

इस प्रतिमा के दाहिने हाथों में से एक हाथ अभय मुद्रा में तथा दूसरे हाथ में कुल्हाड़ी दिखानी चाहिए। बाएँ हाथों में से एक हाथ वरद मुद्रा में और दूसरे हाथ में कृष्ण मृग होना चाहिए।

यह प्रतिमा समभंग मुद्रा में प्रदर्शित होती है। देवता के मस्तक पर जटाजूट होना चाहिए, जिसके ऊपर अर्धचन्द्र को दिखाया जाता है। उन्हें विभिन्न आभूषणों तथा पीताम्बरधारी होना चाहिए।

जितेन्द्रनाथ बनर्जी ने शिव की एक *केवल चन्द्रशेखर* प्रतिमा का उल्लेख किया है, जिसमें शिव अभंग मुद्रा में खड़े हैं। प्रतिमा चतुर्भुजी है। उसके आगे बाएँ हाथ में कपाल है। पीछे के दाहिने हाथ में अक्षयमाला है। आगे का दाहिना हाथ खंडित है। पीछे का बायाँ हाथ ऊपर की ओर उठा है। सम्भवतः उसमें त्रिशूल रहा होगा, क्योंकि त्रिशूल का ऊपरी काँटेदार भाग सुरक्षित है।[2]

(ii) उमा सहित चन्द्रशेखर

अंशुमद्भेदागम के विवरण से ज्ञात होता है कि यह प्रतिमा भी चन्द्रशेखर प्रतिमा के समान ही होती है। अंतर केवल इतना है कि चन्द्रशेखर के साथ उसकी पीठिका पर या अन्य पीठिका पर उमा की आकृति बनाई जाती है।

(iii) आलिंगन चन्द्रशेखर

इस प्रतिमा में चन्द्रशेखर अपने बगल में बैठी उमा का आलिंगन करते हुए दिखाए जाते हैं। उमा के बाएँ हाथ में कमल होता है या दाहिने हाथ से शिव की कटि का आलिंगन करती है और उसके बाएँ हाथ में पुष्प रहता है।

आलिंगन चन्द्रशेखर की एक सुंदर प्रतिमा तंजौर के वृहदेश्वर मंदिर से प्राप्त हुई है।[3]

2- पशुपति प्रतिमा

प्रतिमाशास्त्र के ग्रन्थों के अनुसार यह प्रतिमा भी समभंग मुद्रा में निर्मित होती है। इसमें शिव को चतुर्भुज रूप में दिखाया जाता है। उनके दाहिने हाथों में से एक हाथ अभय मुद्रा तथा दूसरे हाथ में त्रिशूल रहता है। बाएँ हाथों में से एक हाथ वरद मुद्रा में तथा दूसरे में अक्षयमाला रहती है।

अंशुमद्भेदागम के अनुसार पशुपति मूर्ति स्थानक और आसन दोनों ही मुद्राओं में बनाई जा सकती है, किन्तु *शिल्परत्न* के अनुसार यह केवल स्थानक रूप में प्रदर्शित होनी चाहिए।

मोहनजोदड़ो की खुदाई में एक अत्यन्त रोचक मुद्रा प्राप्त हुई है, जिस पर त्रिशीर्ष प्रतिमा बनी है। यह प्रतिमा योगासन लगाए बैठी है। उसका वक्षस्थल ग्रैवेयक आभूषण से मंडित है, अधोभाग नग्न है। शीर्ष पर श्रृंग मुकुट है। उसके दक्षिण पार्श्व में गज और शार्दूल बैठे हैं तथा बाएँ पार्श्व में गैंडा और महिष हैं। आसन के नीचे दो मृग खड़े हैं।

मार्शल महोदय ने उसे पशुपति शिव प्रतिमा बताया है।[4]

मजूमदार महोदय ने बताया है कि यह प्रतिमा शिव के तीन रूपों को प्रकट करती है—

1. त्रिमुख
2. पशुपति
3. महायोगी[5]

3- सुखासन प्रतिमा

शिल्परत्न में सुखासन प्रतिमा का विवरण प्राप्त होता है। इस प्रतिमा में शिव को चतुर्भुज रूप में दिखाया जाना चाहिए। उनके तीन नेत्र होने चाहिए। वे पीठिका पर आसीन हों। उनका बायाँ पैर मोड़कर ऊपर रखा हो और दाहिना पैर नीचे लटकता हुआ होना चाहिए।

वे व्याघ्रचर्म तथा रेशमी वस्त्र पहने रहते हैं। उनके दाहिने हाथों में से एक हाथ अभय मुद्रा में तथा दूसरे में परशु दिखाना चाहिए। उनके बाएँ हाथों में से एक हाथ सिंहकर्ण मुद्रा में तथा दूसरा पीठिका पर रखा हुआ हो अथवा दूसरे हाथ में मृग होना चाहिए। उन्हें विभिन्न आभूषण धारण किए हुए प्रदर्शित किया जाना चाहिए।

4- उमा सहित शिव-प्रतिमा

इस प्रतिमा में शिव सुखासन प्रतिमा के ही समान दिखाए जाते हैं, किन्तु बाईं ओर उसी पीठिका पर उमा सहित शिव को प्रदर्शित किया जाता है। उमा के नेत्र शिव की ओर होते हैं। उसके एक हाथ में कमल तथा दूसरा हाथ सिंहकर्ण मुद्रा में होता है।

5- सोमास्कन्द रूप-प्रतिमा

यह प्रतिमा उमा सहित शिव प्रतिमा के समान ही होती है, किन्तु शिव और उमा के बीच अथवा उमा की जंघा पर बैठे हुए *स्कन्द* को प्रदर्शित किया जाता है।[6]

6- महादेव-प्रतिमा

इस प्रतिमा के संबंध में विष्णुधर्मोत्तर पुराण का कथन है कि महादेव को वृषभ पर आरूढ़ प्रदर्शित किया जाना चाहिए।[7] उनके पाँच मुख होने चाहिए, जिनमें चार मुख सौम्य रूप वाले तथा दक्षिण दिशा का मुख भयानक होना चाहिए।

उनके गले में मुण्डों की माला होनी चाहिए। उनके सभी मुखों में तीन नेत्र होने चाहिए, किन्तु उत्तर दिशा वाले मुख में तीसरा नेत्र नहीं होता।

भागवत पुराण में बताया गया है कि सत्त्व, रजस और तमस गुण ही उनके तीन नेत्र हैं।[8]

7- माहेश्वर-प्रतिमा

इस प्रतिमा के संबंध में विष्णुधर्मोत्तर पुराण में बताया गया है कि माहेश्वर के रूप में शिव का वर्ण श्वेत, चन्द्र-ज्योति सदृश होता है।[9]

उनकी दस भुजाएँ होती हैं। दाहिनी चार भुजाओं में अक्षयमाला, त्रिशूल, दण्ड, नीलोत्पल तथा सूर्य होता है।

बाईं ओर की भुजाओं में मातुलुंग, धनुष, डमरू, कमण्डलु तथा चर्म रहता है।[10]

वासुदेव शरण अग्रवाल ने एक शिव माहेश्वर प्रतिमा का उल्लेख किया है।[11]

8- उमा-माहेश्वर प्रतिमा

इसका विवरण *विष्णुधर्मोत्तर पुराण* तथा *रूपमण्डन* में प्राप्त होता है।

1- विष्णुधर्मोत्तर पुराण के अनुसार

इस प्रतिमा के अंतर्गत उमा और शिव को एक ही पीठिका पर आलिंगन करते हुए प्रदर्शित किया जाना चाहिए। जटाजूटधारी शिव के दाहिने हाथ में नीलोत्पल तथा बायाँ हाथ उमा के कंधे पर दिखाया जाना चाहिए। उमा का दाहिना हाथ शिव के कंधे पर और बाएँ हाथ में कमल पुष्प प्रदर्शित किया जाना चाहिए।[12]

2- रूपमण्डन के अनुसार

उमा-माहेश्वर प्रतिमा के अंतर्गत शिव को चतुर्भुज दिखाया जाना चाहिए।[13] उनका एक हाथ उमा के कंधे पर तथा दूसरे हाथ में सर्प प्रदर्शित करना चाहिए।

रूपमण्डन के अनुसार ही उमा-माहेश्वर प्रतिमा के साथ वृषभ, स्कन्द, नन्दी तथा नृत्य करते हुए श्रृंगी ऋषि को भी प्रदर्शित करना चाहिए।

रामपुर से प्राप्त अष्टधातु निर्मित उमा-माहेश्वर प्रतिमा में शिव तथा पार्वती दोनों का साथ चित्रण है। शिव के दोनों हाथों में से दाहिने हाथ में उत्पल है और बायाँ हाथ पार्वती के ऊपर रखा है। पार्वती उनकी बाईं जंघा पर बैठी है।[14]

बिहार शरीफ से उमा-माहेश्वर की एक अत्यंत सुंदर प्रतिमा प्राप्त हुई है। इसमें चतुर्भुज शिव ललितासन में बैठे हैं और पार्वती उनकी बाईं ओर गोद में बैठी है। एक हाथ से शिव पार्वती की ठुड्डी का स्पर्श कर रहे हैं और दूसरा हाथ पीठ की ओर आलिंगनबद्ध है। एक हाथ पार्वती का बायाँ स्तन स्पर्श करता हुआ दिखाया गया है।

9- शिव की दक्षिण-प्रतिमा

शिव नृत्य, संगीत, योग आदि के आचार्य भी माने जाते हैं तथा उनकी अनेक प्रतिमाओं का निर्माण इन विषयों के प्रणेता के रूप में किया गया है।[15] शिव ने यह ज्ञान दक्षिण दिशा की ओर मुख करके दिया था, इसलिए इसे दक्षिण प्रतिमा की संज्ञा प्रदान की गई है।[16]

यह प्रतिमा चार प्रकार से निर्मित की जाती है—

1- व्याख्यान-दक्षिण-प्रतिमा
2- ज्ञान-दक्षिण-प्रतिमा
3- योग-दक्षिण-प्रतिमा
4- वीणाधर-दक्षिण-प्रतिमा

1- व्याख्यान-दक्षिण-प्रतिमा

शिव की व्याख्यान दक्षिण प्रतिमा के अनेक विवरण प्राप्त होते हैं।[17] इसमें शिव का चित्रण पीठिका पर मृगचर्म पर आसीन किया जाता है। उनका एक पैर मोड़कर ऊपर तथा दूसरा नीचे लटकता हुआ होना चाहिए।

इस प्रतिमा में शिव के तीन नेत्र और चार भुजाएँ होनी चाहिए। शिव के मस्तक पर जटा और भार प्रदर्शित किया जाना चाहिए। जटा में एक तरफ धतूरे का फूल और सर्प तथा दूसरी ओर कपाल और अर्धचन्द्र प्रदर्शित किया जाना चाहिए।

इस प्रतिमा को ऋषियों से घिरा हुआ निर्मित किया जाना चाहिए।

2- ज्ञान-दक्षिण-प्रतिमा

शिव की ज्ञान दक्षिण प्रतिमा व्याख्यान दक्षिण प्रतिमा से बहुत भिन्न नहीं है। इसमें उनके एक हाथ में उत्पल तथा दूसरा अभय मुद्रा में प्रदर्शित किया जाता है। उनके आगे के एक हाथ में अक्षयमाला होती है।

अहिच्छत्र से प्राप्त गुप्तकाल के अंतिम समय के एक भग्न शिव मंदिर से प्राप्त एक टुकड़े पर इस अवतार की प्रतिमा का चित्रण किया गया है।[18]

3- योग-दक्षिण-प्रतिमा

प्रतिमाशास्त्रीय ग्रंथों में इस प्रतिमा में शिव को कई प्रकार से आसीन दिखाने का विवरण उपलब्ध होता है।

इस प्रतिमा में देवता के दाहिने हाथ में अक्षयमाला दिखाने का विधान है। इसमें उनका बायाँ हाथ योग मुद्रा में गोद में रखा हुआ दिखाना चाहिए।

एक अन्य विवरण के अनुसार उनके पिछले हाथ में कमण्डलु और अक्षयमाला तथा अगले दोनों हाथ घुटनों पर सीधे प्रसारित होना चाहिए।

प्रतिमाशास्त्रीय ग्रंथों में इस प्रतिमा में शिव को कई प्रकार से आसीन दिखाने का विवरण उपलब्ध होता है। इस प्रतिमा में देवता के दाहिने हाथ में अक्षयमाला दिखाने का विधान है। इसमें उनका बायाँ हाथ योग मुद्रा में गोद में रखा हुआ दिखाना चाहिए।

एक अन्य विवरण के अनुसार उनके पिछले हाथ में कमण्डलु और अक्षयमाला तथा अगले दोनों हाथ घुटनों पर सीधे प्रसारित होना चाहिए।

4- वीणाधर-दक्षिण-प्रतिमा

इस प्रतिमा का विवरण अनेक शैवागमों में प्राप्त होता है। इसमें शिव के सामने के दोनों हाथों में वीणा तथा पिछला रूप व्याख्यान-दक्षिण-प्रतिमा की तरह होता है। मद्रास संग्रहालय में शिव की वीणाधर-दक्षिण-प्रतिमा का सुंदर चित्रण संग्रहीत है।

10- हरिहर प्रतिमा

हरिहर प्रतिमा का स्पष्ट रूप से निर्माण सर्वप्रथम गुप्तकाल से प्रारंभ हुआ। ईसा संवत् के आरंभ के पूर्व विष्णु और शिव की प्रतिमाओं का विकास हो रहा था। उस समय समाज में शैव एवं वैष्णव दोनों में मतभेद चल रहा था।

इन दोनों संप्रदायों के विरोध की समाप्ति के लिए दोनों देवताओं का एकीकरण किया गया, जिसके फलस्वरूप हरिहर प्रतिमा का निर्माण हुआ।

पुराणों में इस प्रकार का उल्लेख मिलता है कि जगत *रुद्र* और *नारायण* से उद्भूत है। विष्णु पुराण में बताया गया है कि शिव ने स्वयं ही कहा है कि वे हरि के अर्धभाग हैं।[19]

गुप्तकाल की कुचरी से प्राप्त एक हरिहर प्रतिमा प्रयाग संग्रहालय में सुरक्षित है।[20]

मथुरा से प्राप्त एक स्तंभ पर अन्य देवताओं के साथ हरिहर की भी प्रतिमा है। इस प्रतिमा का बायाँ भाग विष्णु का है, जिसमें देवता किरीट, कुण्डल और धोती पहने हुए हैं। बाईं ओर के ऊपर वाले हाथ में शंख है और नीचे वाला हाथ चक्र पुरुष के मस्तक पर रखा है।

प्रतिमा का दाहिना भाग शिव का है। इस भाग में देवता को जटाभार, यज्ञोपवीत और मृगचर्म धारण किए हुए दिखाया गया है। शिव भाग के ऊपर वाले हाथ की वस्तु खंडित हो चुकी है, परंतु नीचे वाला हाथ त्रिशूल पुरुष के ऊपर रखा है।

मथुरा संग्रहालय में इस काल की अनेक खंडित प्रतिमाएँ हैं। बादामी से प्राप्त हरिहर प्रतिमा[21] में अन्य विशेषताओं के साथ-साथ वाम भाग (विष्णु भाग में) मकर कुण्डल और दक्षिण भाग (शिव भाग में) सर्प कुण्डल प्रदर्शित किया गया है।

इसके अतिरिक्त प्रतिमा के दाहिनी ओर पार्वती और नन्दी को दिखाया गया है तथा बाईं ओर लक्ष्मी और गरुड़ को प्रदर्शित किया गया है।

11- कल्याणसुन्दर प्रतिमा

इस प्रतिमा में शिव और पार्वती के विवाह का दृश्य प्रस्तुत किया गया है।

शास्त्रीय विधान के अनुसार इस प्रतिमा में शिव और पार्वती के बीच में स्वर्ण कलश लिए हुए विष्णु को प्रदर्शित करना चाहिए, सामने हवन करते हुए ब्रह्मा का चित्र हो और चारों ओर किन्नर, गंधर्व, मातृका एवं ऋषि प्रदर्शित हों।

शिव अपना दाहिना हाथ आगे बढ़ाकर पार्वती का पाणिग्रहण कर रहे हों। शिव का बायाँ हाथ वरद मुद्रा में तथा अन्य हाथों में परशु और मृग होना चाहिए। शिव के अलंकरणों में विभिन्न आभूषण और जटामुकुट दिखाया जाता है।

त्रिभंग मुद्रा में खड़े शिव की बाईं ओर, बाएँ हाथ में नीलोत्पल लिए हुए झुकी हुई मस्तक वाली लज्जित पार्वती को प्रदर्शित किया गया है।

डॉ० वी० पी० सिंह ने बिहार से प्राप्त एक कल्याणसुन्दर प्रतिमा का उल्लेख किया है।[22] जो पटना संग्रहालय में सुरक्षित है।

इसमें शिव एवं पार्वती के विवाह का दृश्य उत्कीर्ण किया गया है। शिव के बाईं ओर पार्वती खड़ी हैं। पार्वती के एक हाथ में दर्पण है और दूसरा हाथ शिव के हाथ में है।

शिव चतुर्भुजी हैं। उनके चारों हाथों में से तीन में त्रिशूल, डमरू और कपाल है तथा एक दाहिना हाथ पार्वती का दाहिना हाथ पकड़े हुए है।

शिव और पार्वती दोनों की आँखें नीचे झुकी हुई हैं। पार्वती के वक्षस्थल पर कंचुकी, कमर में करधनी, गले में हार और कानों में कर्णफूल है।

हार, कानों में कर्णफूल है। नीचे शिव-पार्वती के बीच में चतुर्भुज ब्रह्मा को पुरोहित के रूप में बैठे दिखाया गया है।

12- शिव की नृत्य प्रतिमाएँ

शैवागमों के अनुसार शिव ने एक सौ आठ मुद्राओं में नृत्य किया था। इनकी नृत्य की विभिन्न मुद्राओं की प्रतिमाएँ चिदम्बरम् के गोपुरम् में बनी हैं। भरत के *नाट्यशास्त्र* में इन मुद्राओं के अलग-अलग नाम दिए गए हैं।

अंशुमद्भेदागम के अनुसार नृत्य मुद्रा के अंतर्गत शिव अपस्मार पुरुष पर दाहिना पैर रखे हुए प्रदर्शित किए जाते हैं। उनका बायाँ पैर उठा हुआ तथा तिरछा रहता है। शिव की चार भुजाएँ दिखाई पड़ती हैं। सामने का बायाँ हाथ गजहस्त मुद्रा में इस प्रकार दिखाया जाता है कि उनकी उँगलियाँ पैर की ओर संकेत करती हों।

सामने वाले दाहिने हाथ में सर्पवलय धारण किए हुए तथा पीछे वाले हाथ में डमरू धारण किए रहते हैं। उनकी आकृति के नीचे विशाल प्रभामण्डल दिखाया जाता है।

उनके सिर पर विशाल जटाजूट होता है, जो सूर्य, अर्धचन्द्र और कपाल आदि से सुशोभित होता है। उनके जटाजूट से पाँच, सात या ग्यारह लटें बाहर की ओर निकली हुई दिखाई जाती हैं। शिव मृगचर्म धारण किए रहते हैं। उनकी बाईं ओर उमा की भी आकृति बनाई जा सकती है।

शिव की नृत्य प्रतिमाएँ भारत के विभिन्न भागों में बनाई जाती थीं, किन्तु इनकी सर्वाधिक संख्या दक्षिण भारत में ही प्राप्त होती है।

13- वृषभ वाहन प्रतिमा

इस प्रतिमा में शिव अपने वाहन नन्दी पर बैठे दिखाए जाते हैं।[23] साथ में पार्वती को भी बैठा प्रदर्शित किया जाता है।

शिव की एक वृषभ वाहन प्रतिमा अयहोल से प्राप्त हुई है।[24] जिसमें शिव सुखासन मुद्रा में वृषभ पर आरूढ़ हैं।

जितेन्द्रनाथ बनर्जी ने पियर्स संग्रह के अंतर्गत प्राप्त वृषभ वाहन प्रतिमा[25] का उल्लेख किया है। इस प्रतिमा में भी शिव सुखासन मुद्रा में वृषभ पर बैठे हैं। इस प्रतिमा में शिव के तीन सिर तथा चार भुजाएँ हैं।

इसी प्रकार मथुरा संग्रहालय में सुरक्षित वृषभ पर बैठे हुए शिव और पार्वती की एक पाषाण निर्मित प्रतिमा का उल्लेख भी बनर्जी ने किया है।

14- अर्धनारीश्वर प्रतिमा

यह प्रतिमा शैव के सोम सिद्धांत और कापालिक संप्रदाय से संबंधित है। इन संप्रदायों में शिव और पार्वती दोनों का बड़ा महत्व दिया गया है। अर्धनारीश्वर प्रतिमा इन संप्रदायों के दर्शन के आधार पर निर्मित की जाती है।

सोम सिद्धांत के अनुसार यह समस्त जगत शिव और पार्वती की लीला की प्रतिछाया है। कापालिक संप्रदाय प्रत्येक स्त्री-पुरुष में शिव-पार्वती का रूप देखता है।

जितेन्द्रनाथ बनर्जी ने शिव के अर्धनारीश्वर प्रतिमा निर्माण के आधारभूत तत्वों की विवेचना करते हुए स्पष्ट किया है कि यह प्रतिमा शैव और शाक्त संप्रदायों की आधारभूत एकता को व्यक्त करती है।

संभवतः दोनों ही संप्रदायों (शैव और शाक्त) में संघर्ष की स्थिति थी और इस स्थिति में दोनों संप्रदाय अपनी-अपनी श्रेष्ठता घोषित करते थे। इसी संघर्ष की स्थिति को दूर करने के लिए अर्धनारीश्वर की कल्पना की गई।

इस प्रतिमा में आधा भाग पुरुष और आधा भाग नारी का प्रदर्शित किया जाता है।[26]

शिव के अर्धनारीश्वर रूप की प्रतिमा निर्माण के संबंध में विष्णुधर्मोत्तर पुराण में बताया गया है कि देवता का आधा भाग नारी का और आधा भाग पुरुष का होना चाहिए। आधे भाग में शिव से संबंधित अलंकरण तथा आयुध (जटाभार, सूर्य, यज्ञोपवीत, मेखला, त्रिशूल) और आधे भाग में स्त्रीसुलभ आभूषण प्रदर्शित किया जाना चाहिए।[27]

मत्स्य पुराण में भी बताया गया है कि अर्धनारीश्वर रूप में देवता का आधा शरीर (शिव भाग) जटाजूट, सर्प, यज्ञोपवीत, त्रिशूल आदि से और आधा भाग सुंदर वस्त्र, केयूर, मेखला, कंकण आदि से सुशोभित रहता है।[28]

लक्षण ग्रंथों के आधार पर निर्मित शिव की अर्धनारीश्वर प्रतिमाएँ भारत के विभिन्न भागों से प्राप्त होती हैं। मथुरा संग्रहालय में दो गुप्तकालीन सुंदर अर्धनारीश्वर प्रतिमाएँ संग्रहीत हैं।[29]

इन प्रतिमाओं में शिव वाले अंग (अर्थात दाहिना) हाथ अभय मुद्रा में ऊपर उठा है और पार्वती वाले अंग (अर्थात बायाँ) हाथ में दर्पण है। पुरुष भाग में जटाजूट और नारी भाग में स्तन का प्रमुख रूप से अंकन हुआ है।

गुप्तकालीन सुंदर अर्धनारीश्वर प्रतिमाएँ संग्रहीत हैं।[29] इन प्रतिमाओं में शिव वाले अंग का (अर्थात दाहिना) हाथ अभय मुद्रा में ऊपर उठा है और पार्वती वाले अंग के (अर्थात बायाँ) हाथ में दर्पण है। पुरुष भाग में जटाजूट और नारी भाग में स्तन का प्रमुख रूप से अंकन हुआ है।

तंजौर के वृहदेश्वर मंदिर से प्राप्त अर्धनारीश्वर प्रतिमा[30] का उल्लेख बनर्जी महोदय ने किया है। इसी क्रम में पूर्वी बंगाल से प्राप्त और राजशाही संग्रहालय में सुरक्षित अर्धनारीश्वर प्रतिमा[31] विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

इस प्रतिमा का अधिकांश भाग टूट चुका है, फिर भी पुरुष और स्त्री भाग की पहचान उनके अलंकरणों और वेशभूषा से आसानी से हो जाती है। इसी प्रकार मद्रास संग्रहालय में सुरक्षित एक कांस्य निर्मित अर्धनारीश्वर प्रतिमा का उल्लेख गोपीनाथ राव ने भी किया है।[32] जिसमें शिव और पार्वती को अर्धनारीश्वर के रूप में प्रदर्शित किया गया है।

इस प्रकार पौराणिक कथाओं से असंबद्ध शिव की सौम्य प्रतिमाएँ प्राचीन काल से ही निर्मित की जाती थीं। हिन्दू समाज में ये प्रतिमाएँ अत्यन्त महत्वपूर्ण थीं।

संदर्भ सूची

1- The Development of Hindu Iconography, पृ. 465
2- वही, पृ. 467
3- वही, पृ. 468
4- मार्शल, जे० ए०, *Mohenjodaro and the Indus Civilization*, खण्ड 1, पृ. 59
5- मजूमदार, आर० सी०, *Vedic Age*, पृ. 186–87
6- The Development of Hindu Iconography, पृ. 470

7-देवदेवं महादेवं वृषभारूढं तु कारयेत्।
तस्य वक्त्राणि पञ्च यत्नान्।
सर्वाणि सौम्य रूपाणि दक्षिणं विकटं मुखम्।
कपालमालिनं भीमं जगत् संहारकारकम्।
त्रिनेत्राणि च सर्वाणि वदनं तु उत्तरं विना।
जटा कपालो महति तस्य चन्द्रकला भवेत्।
(विष्णुधर्मोत्तर पुराण 44/14–16)

8- भागवत पुराण 8/7/30

9- “वर्णस्तथा च कर्तव्यः चन्द्रांशुसदृशप्रभः”
(विष्णुधर्मोत्तर पुराण 44/20)

10- दशबाहुस्तथा कार्यो देवदेवो महेश्वरः।
अक्षमाला त्रिशूलं च शरदण्डं चोत्पलम्।
तस्य दक्षिणहस्तेषु कर्तव्यानि महाभुजैः।
वामेषु मातुलुंगं च पाशदण्डं कमण्डलुम्।
तथा चर्म च कर्तव्यं देवदेवस्य शूलिनः।
(विष्णुधर्मोत्तर पुराण 44/17–19)

11- अग्रवाल, वी० एस०, *Indian Art*, पृ. 283

12- युग्मं स्त्री पुरुषं कार्यं उभयेशो दिव्य रूपिणा।
अष्टवक्त्रं तु देवेश जटा चन्द्रार्ध भूषितम्।
वामपाणि तु देवस्य देवस्कन्धे निवेशयेत्।
दक्षिणं तु करं शम्भोः उत्पलेन विभूषितम्।
(विष्णुधर्मोत्तर पुराण 105/8–10)

13- रूपमण्डन 35/16, 20

14- सिंह, वी० पी०, *भारतीय कला को बिहार की देन*, पृ. 131

15- Elements of Hindu Iconography, खण्ड 2, भाग 1, पृ. 275

16- Elements of Hindu Iconography, पृ. 276

17- विष्णुधर्मोत्तर पुराण 108/15–16; शिल्परत्न 49/14–15

18- *The Development of Hindu Iconography*, पृ. 471

19- विष्णु पुराण 56/11–13

20- गुप्त, पी० एल०, *Gupta Samrajya*, पृ. 571

21- *The Development of Hindu Iconography*, पृ. 546

22- सिंह, वी० पी०, *भारतीय कला को बिहार की देन*, पृ. 130–31, चित्र संख्या 98

23- *Elements of Hindu Iconography*, खण्ड 2, भाग 1, पृ. 278

24- वही, पृ. 278

25- *The Development of Hindu Iconography*, पृ. 468

26- वही, पृ. 552

27- विष्णुधर्मोत्तर पुराण 55/9, 13

28- मत्स्य पुराण 260/8, 17

29- गुप्त, पी० एल०, *Gupta Samrajya*, पृ. 570

30- *The Development of Hindu Iconography*, पृ. 484–87

31- भट्टशाली, एन० के०, *Iconography of Buddhist and Brahmanical Sculptures in the Dacca Museum*, पृ. 131

32- *Elements of Hindu Iconography*, खण्ड 2, भाग 1, पृ. 278